शोध पत्र - संगीत

शास्त्रीय गायन शैली : ख्याल और उसकी बंदिशे

* डॉ. नित्यप्रिया श्रीवास्तव

* डी. फिल संगीत प्रवीण, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद

ध्रुवपद गायन के पश्चात ख्याल गायन प्रचार में आया। ख्याल गायन से पूर्व ध्रुपद गायन का पूर्णतया प्रधान्य था। किन्तु ख्याल गायन के प्रचार में आते ही ध्रुपद गायन का प्रचलन कम हो गया।'ख्याल' शब्द के उद्भव के बारे में 'मुहम्मद मुस्तफा खाँ 'मद्दह' ने 'उर्दू कोश' का संकलन किया है, जिसमें उसने उन सभी अरबी, फारसी और तुर्की शब्दों का संग्रह किया है जिनका उर्दू में प्रचलन रहा है। उनका कहना है कि 'ख्याल' अरबी शब्द है। इसके अनेक अर्थ होते हैं, जिनमें हम तीन ही अर्थों को लेते हैं– (क) सामान्य या विधायक कल्पना) (ख) अनुभूति (ग) कल्पना प्रणव छंद। 'ख्याल' शब्दका अर्थ कल्पना और कल्पनापरक संरचना दोनों होता है।[1]

'ख्याल' शैली का अधिकतर प्रचार 18वीं शताब्दी, मुहम्मद शाह रंगीले के शासन काल में हुआ। इसका आविष्कार ई0 14वीं के अमीर खुसरो ने किया और दूसरा यह कि इसकी परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। इसका नामकरण भले ही बाद में हुआ हो, कुछ विचारकों की संगति में मध्यकाल में प्रचलित रूप नामक प्रबन्धक से ख्याल का विकास हुआ है। रूपक ऐसा प्रबन्ध था जिसमें किसी एक के अन्तर्गत नवीन स्वरों की योजना पर राग रूप बनाया जाता था।''

'ख्याल' प्राचीन काल में नहीं था। उपरोक्त विचारों से यह प्रतीत होता है कि 18वीं शताब्दी तक इस शैली का प्रचार हुआ था। ख्याल गायन के कई घराने हुए जिन्होंने संगीत के इस शैली को सुरक्षित रखा है।

''कुछ लोग 'ख्याल' का आविष्कारक जौनपुर के ''सुल्तान हुसैन शर्की'' को मानते हैं कुछ मानते हैं कि ''मुहम्मद शाह रंगीले'' इसके प्रारम्भिक रचयिता हैं। अन्य मतानुसार अमीर खुसरो ने इसका आविष्कार किया। एक मतानुसार दिल्ली दरबार में तानसेन के पुत्र वंशज ध्रुपद गायक थे तथा पुत्री वंशज बीनकार थे बीनकारों को गायक के पीछे संगत के लिए पीछे बैठना पड़ता था। अतः पुत्री वंशजों बीनकारों ने ध्रुपद गायकों के समान आगे बैठने के उद्देश्य से ध्रुपद के आधार पर एक नवीन गायन शैली का आविष्कार का विचार किया।[2] 'ख्याल' गायन शैली एक बहुत ही सुन्दर एवं अनेकों रस से परिपूर्ण गायन शैली है जो कि श्रोतागणों पर बहुत ही सकारात्मक प्रभाव छोड़ती है। '''ख्याल' गायन शैली न अरब से आई न फारस से अपने यहाँ एक खास सांगीतिक संरचना –शैली थी और उसके गाने का एक खास ढंग था, जो भारतीय संगीत में प्रचलित थी। इसका प्रवर्त्तन न अमीर खुसरो ने किया, न जौनपुर के शर्की नवाबों ने। 'ख्याल' उस शैली का एक स्वभाविक विकासमात्र रहा है। इसमें संदेह नहीं कि इन दोनों ने इसके विकास में योगदान किया था। 18वीं शताब्दी में यह अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। उस समय मुहम्मद शाह का शासनकाल था।

उस काल में अदारंग और सदारंग ने इस शैली में सैकड़ो गीतों की रचना की यह उल्लेखनीय बात है कि कर्नाटक–संगीत के पल्लविगायन का भी पूर्ण विकास 18वीं शताब्दी में ही हुआ।[3]

^[;ky* xk;u dk nks çdkj gksrk g&

(1) बड़ा 'ख्याल' (विलंम्बित लय)

(2) छोटा 'ख्याल' (मध्य अथवा द्रुत लय)

1. बड़ा ख्याल– बड़े ख्याल गायन शैली में विलंम्बित लय का प्रयोग होता है एवं एकताल, आड़ाचार ताल इत्यादि तालों का प्रयोग किया जाता है। ख्याल प्रारम्भ करने से पहले आलाप किया जाता है फिर बंदिश को गाकर आलाप, तान का प्रयोग किया जाता है। आलाप एवं भिन्न–भिन्न प्रकार के तानों का प्रयोग ख्याल गायन शैली की अद्भुत सौन्दर्य से भर देती है जिसका रसास्वादन करके श्रोतागण का हृदय आनंद से भर जाता है।

2. छोटा ख्याल– छोटा ख्याल गायन शैली का लय द्रुत लय में गायी जाती है छोटा ख्याल के लिए तीनताल का प्रयोग करते हैं।

ख्याल गायन शैली आधुनिक भारतीय शास्त्रीय संगीत में सबसे प्रचलित गायन शैली है।

ख्याल गायन के दो भाग होते है–

1.स्थाई

2.अन्तरा

[;ky xk;u dk rhu çdkj gksrk g&

1.विलम्बित लय

2.मध्य लय

3.द्रुत लय

mnkgj.k Lo#i cfn'k fuEufyf[kr g&

foyfcr y; dh dN cfn'k &

राग :विंहगड़ा
ताल: झपताल
स्थाई–

आनन्द मुखचन्द्र जैसे मिले पिया कहत
बेन पिया घर आवन को आज

अन्तरा– *बाला जोबन मद के भरे नैन*
मोतियन माँग सुहाग सुहागिन को आज।[4]
राग: अभोगी
ताल: तीन ताल
स्वरबद्ध: त्रिम्बक राव जनोरिकर

बंदिश:
मेरो मन लाल गोपाल की मूरत ठाढ़ रही ।
मधुर मधुर मुरली अधर धरे बाजत ,गावत तान रसाले री ।।
राग: अडाना
ताल: एक ताल
स्वरबद्ध: श्रीकृष्ण नारायन रतनजानकर 'सुजान'

बंदिश:
स्थायी:

हे गिरिधारी बिनती यही हमारी
सुन लीजियो बनवारी ।

अन्तरा:

गोकुल छंअडी कै और ढिंग ना जइयो
हमरे गुन्हा पर रीस न कीजो
सुन लीजियो बनवारी ।।

राग: देवगिरी
ताल: तिलवाडा

बंदिश:
स्थायी:

ब्याहन आयो नीकी बनीके
कारण सीस सेरा झुलायो

अन्तरा:

धन घरी धन रात सुहाग की
बनरी बनाये नैनन में कजरा [5]
राग: शुक्ल बिलावल
ताल: तिल्वाडा

बंदिश:
स्थायी:

तू ही तो पालनहारा दाता मेरे
मोपर करम करो

अन्तरा:

तेरे ही नाम की सुमिरन जपत हूँ
मोरी इच्छा सब पूरण करो
राग: अहीर भैरव
ताल: तिल्वाडा

बंदिश:
स्थायी:

ए टोनवा मोरा जगत सलोना
हमारे भाग सो खिलौना रे

अन्तरा:

अपने पिया पर मखरी पुराए हो
और भराए हो खिलौना [6]
राग : बागेश्री
ताल : एक ताल

बंदिश :
स्थायी :

मोरे नैना बाँवरे भये
उन बिन मोरा कल ना पडत है

अन्तरा:

जब ते पिया परदेस गए री
नैनं नीर झरत है [7]
राग: जोग
ताल: एक ताल

बंदिश:
स्थायी:

तोरे दरसन को तरसे
मोरा जियरा घरी पल

अन्तरा:

मन में पीया छाये रहे
कासे कहूँ परे न निसदिन कल[8]
राग: प्रदीपिकी
ताल: एक ताल

बंदिश:
स्थायी:

मै तो यही जानू री
माई कान्हा कैसेहूँ न बोले

अन्तरा:

ऐसी प्रीती करी कान्हा मोसे
अब क्यों न घर घर तोरी [9]
राग: बहादुरी तोड़ी
ताल: तिल्वाडा

बंदिश:
स्थायी:

महादेव देवन पति पार्वतीपति ईश्वरेश
नीलकंठ पुण्य पंचानन दुखहरण

अन्तरा:

सीश जटाजूट खिप्रन की माला डारे
भस्म अंग भरे आयो चरण परन[10]

राग: मलुहा केदार
ताल: एक ताल

बंदिश:
स्थायी:

थारा गुण मानोगी ये वो जीशा
भई केते ना कहूँ भोर में

अन्तरा:

रंगीले मानडो नलगे जिया सो
महमदसा काई करें तेक वजिया[1]

e/;y; dh dN cfn'k&

राग: मलुहा केदार
ताल: तीन ताल

बंदिश:
स्थायी:

घर आओ सजन मीठा बोला
तेरे बेखातर सब कुछ छोड़ा
काजर तेल तमोला

अन्तरा:

जो नहीं आवे रेन बिहावे
छिन मासा छिन तोला
मीरा के प्रभु गिरिधिर नागर
कर धर रहे कपोला

रेफ: राग विज्ञान : भाग ५,विनायक राव पटवर्धन , पृष्ठ ६४

राग: नायकी कानडा
ताल: तीन ताल

बंदिश:
स्थायी:

घन से घना गरजे
गरज गरज कहीं अनत जा बरसे हो तुम

अन्तरा:

कहीं छावत कहीं धाम बनावत
कहीं लागत झरसे हो तुम

रेफ :राग विज्ञान दृभाग ४,विनायक राव पटवर्धन , पृष्ठ १०१

राग: बसंत बहार
ताल: तीनताल

बंदिश:
स्थायी:

अब सब देस छाडे माई महराज बसंत करीछे
मेल कोटि ऋतू मानी रानी दासी चेरी सो

अन्तरा:

करि करि अम्बुवा मोरे साथे बीर लाजो
कोकिला याते बिरलाजो मुने अति सो पीतकी घाते

अन्तरा:

तूही नूर तू ही भूप तेरो ही गुण गाऊँ
सेवा करे सब जीवजन्तु तेरे

रेफ:क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ६ :विष्णु नारायण भातखंडे , पृष्ठ ३११

राग: जिलाफ
ताल: झपताल

बंदिश:
स्थायी:

हजरत अली घर आनंद बधावा
लारि मालनिया फूल लादो सेरा

अन्तरा:

चन्दन बक में होइ रोशनाई
हसन हुसैन जन

रेफ:क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ६,विष्णु नारायण भातखंडे , पृष्ठ ३७५

राग: मालीगौरा
ताल: तीन ताल

बंदिश:
स्थायी:

मेरा मन लाग रही मूरत पीया की
कौलो सहूँ कहो एती पीर

अन्तरा:

उठ चल रे तू संगम मैका पिया के मिलन को
पल पल लगत जग अब ना रहे मैका धीर

रेफ:क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ६,विष्णु नारायण भातखंडे , पृष्ठ ५२

राग: जैजवंती
ताल: तीन ताल

बंदिश:
स्थायी:

मोरे मन की बतियान कैसे कहूँ अब री
सजनी कहत बने ना

अन्तरा:

जिय की बिथा अब कौन सुनेगा
उन बिन मोहे चौन परे ना

रेफ:राग विज्ञान :भाग२ –विनायक राव पटवर्धन,पृष्ठ ११०

राग: श्री
ताल: तीन ताल

बंदिश:
स्थायी:

अपने विरद की लाज बिचारो
सब घट के तुम अन्तर्यामी
भवसागर से पार उतारो

अन्तरा:

गुण अवगुण यह कुछ ना मानो

जो जानो तो पतित उधारो

रेफ:राग विज्ञान:भाग २ –विनायक राव पटवर्धन,पृष्ठ ३४

रेफ:राग विज्ञान–भाग ४–विनायक राव पटवर्धन – पृष्ठ १३५

राग: मालगुंजी

ताल: तीनताल

बंदिश:

स्थायी:

रटत रटत राधा मोहन रसना ना फलका झल्कायी

अन्तरा:

ललित किशोरी दिग यह देही ऐसी जीवन जन्म वृथायी

रेफ रू राग विज्ञान –भाग ४–विनायक राव पटवर्धन – पृष्ठ ६६

राग: देसी

ताल: तीन ताल

बंदिश:

स्थायी:

साँची कहत है अदारंग यह नदी नाव संजोग

अन्तरा:

कौन किसी के आवे जावे
दाना पानी किस्मत लावे
यही कहत सब लोग

रेफ:क्रमिक पुस्तक मालिका दृभाग ६ , विष्णु नारायण भातखंडे,– पृष्ठ ३१०

राग: देसी

ताल: झपताल

बंदिश:

स्थायी:

निरंजन कीजे मलमुक्त मेरे
परताप सो अहमद जूके

ær y; dh dN cfn'k &

राग: बिलासखानी तोड़ी

ताल: एक ताल

बंदिश:

स्थायी:

जगदम्बिका अम्बिका मर्दिनी
अम्ब शुम्भ निशुम्भ गले मुंडमालिका ।।

अन्तरा:

दुर्गे भवानी दानी दयानी ,सुर न्न कीन्हे अभय 'रामरंग'
तेरो ही नाम कालिका ।।

राग: बिलासखानी तोड़ी

ताल: एकताल

बंदिश:

स्थायी:

जुगन जीवें लाल चारों तेरो री माई
मोहे देहो दान दरसन को ।

अन्तरा:

राम लखन भारत रिपु दमन चरण 'रामरंग'
चाहे पर्सन को ।[12]

राग: जोगकौन्स

ताल: एकताल

बंदिश:

स्थायी:

पीहरवा मोरा ,आये न मंदरवा ।

अन्तरा:

गिन गिन हारी ,दिन आवन के ,
'रामरंग' ना आये , न भेजो संदेसवा ।।[13]

fu"d"kZ

''यह कहा जा सकता है कि ख्याल की प्रारम्भिक एवं परवर्ती रचना में गत कई शताब्दियों से प्रचलित शास्त्रिय कंठ–संगीत की अनेक शैलियों के कौशल को समन्वित कर लिया गया। ऐसे तत्वों के समन्वय के ख्याल का अपना एक अलग ढंग एवं विधि बन गई, जिसे पुष्ट करके संगीत की एक स्वतन्त्र शैली तैयार हो गई।[2]

संदर्भ ग्रंथ

1. निबंध संगीत: लक्ष्मी नारायण गर्ग – पृ0 53
2. आाुनिकव्यवसायिक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायनरू परम्परा व लक्षण डा0 जीतराम शर्मा–पृ0 8–9
3. निबंध संगीत: लक्ष्मी नारायण गर्ग – पृ0 56
4. संगीत बोध–डॉ0 शरच्चन्द्र श्रीधर पराजपे पृ0–201
5.हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति,क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ५ , पंडित विष्णु नारायण भातखंडे ,पेज ११६
6.हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति दृक्रमिक पुस्तक मालिका भाग ५ , पंडित विष्णु नारायण भातखंडे पेज ३१३
7. सरस राग दर्शिका:डॉ नीलम शर्मा पाल , पृष्ठ ७१
8. सरस राग दर्शिका दृडॉ नीलम शर्मा पाल , पृष्ठ ६७
9. राग विज्ञान :भाग ६ ,विनायक राव पटवर्धन , पृष्ठ ४६
10. राग विज्ञान:भाग ५,विनायक राव पटवर्धन , पृष्ठ २४२
11.राग विज्ञान,भाग ४,विनायक राव पटवर्धन , पृष्ठ ६०
12. अभिनव गीतांजलि,भाग १ , पंडित रामाश्रय झा 'रामरंग', पृष्ठ १५६
13. अभिनव गीतांजलि,भाग १ , पंडित रामाश्रय झा 'रामरंग', पृष्ठ २२४